तथास्तु

GS SPECIAL

HISTORY

LECTURE - 20

KANNAUJ TRIPARTY STRUGGLE

ALL ONE DAY EXAMS 2026-27

COMPLETE GS

AVAILABLE ON

Anil Rana Sir

कन्नौज का त्रिपक्षीय संघर्ष

Kannauj Tripoorty struggle

- Pal
- Rashtrakutas
- गुर्जर प्रतिहार

त्रिपक्षीय संघर्ष (Tripartite Struggle)

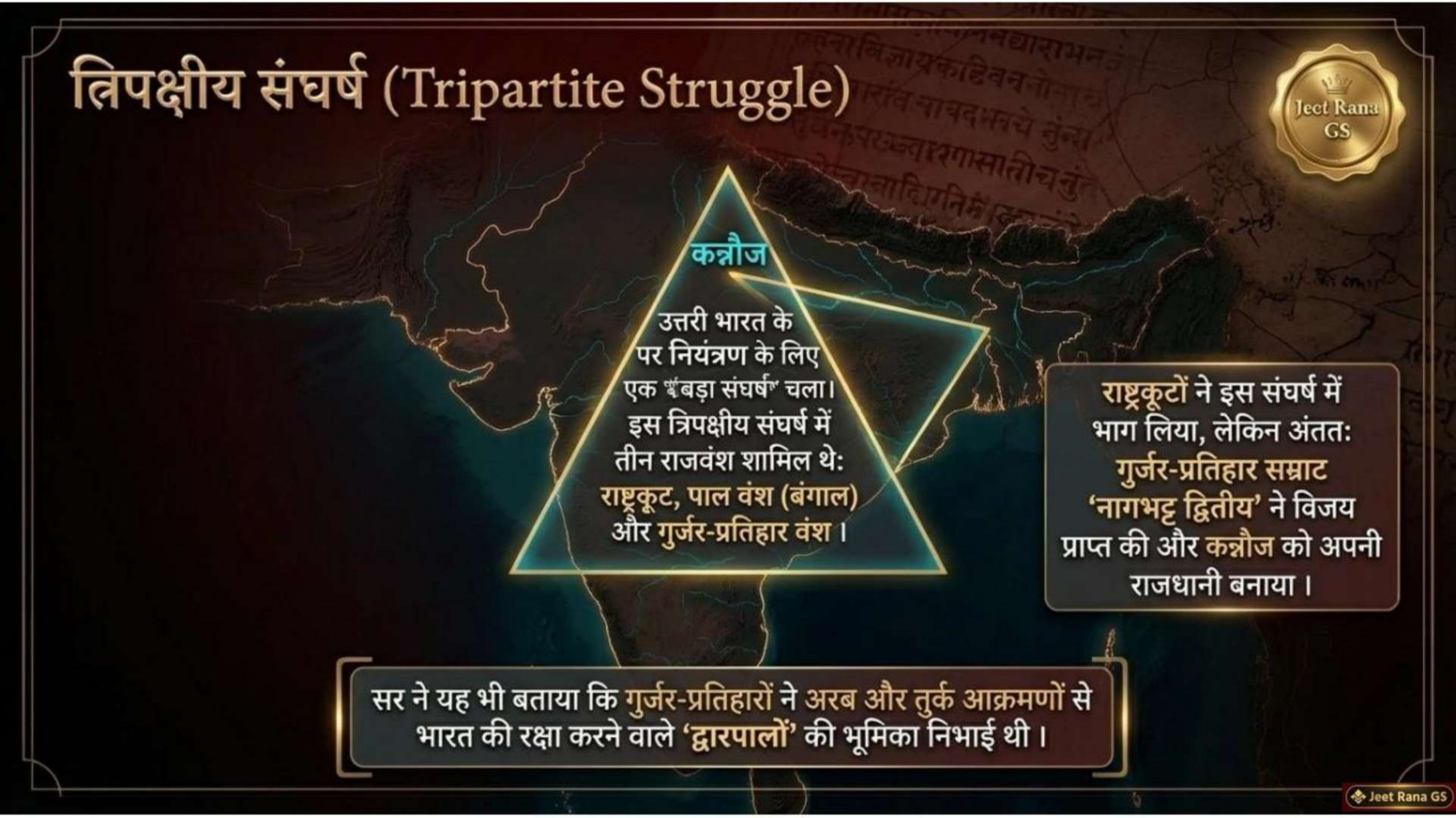

राष्ट्रकूटों ने इस संघर्ष में भाग लिया, लेकिन अंततः गुर्जर-प्रतिहार सम्राट 'नागभट्ट द्वितीय' ने विजय प्राप्त की और कन्नौज को अपनी राजधानी बनाया।

सर ने यह भी बताया कि गुर्जर-प्रतिहारों ने अरब और तुर्क आक्रमणों से भारत की रक्षा करने वाले 'द्वारपालों' की भूमिका निभाई थी।

Jeet Rana GS

Jeet Rana
GS
PREMIUM COACHING INSTITUTE
Rise and Reign of the Gurjara-Pratiharas
A Comprehensive GS Lecture for Competitive Exams
Jeet Rana GS

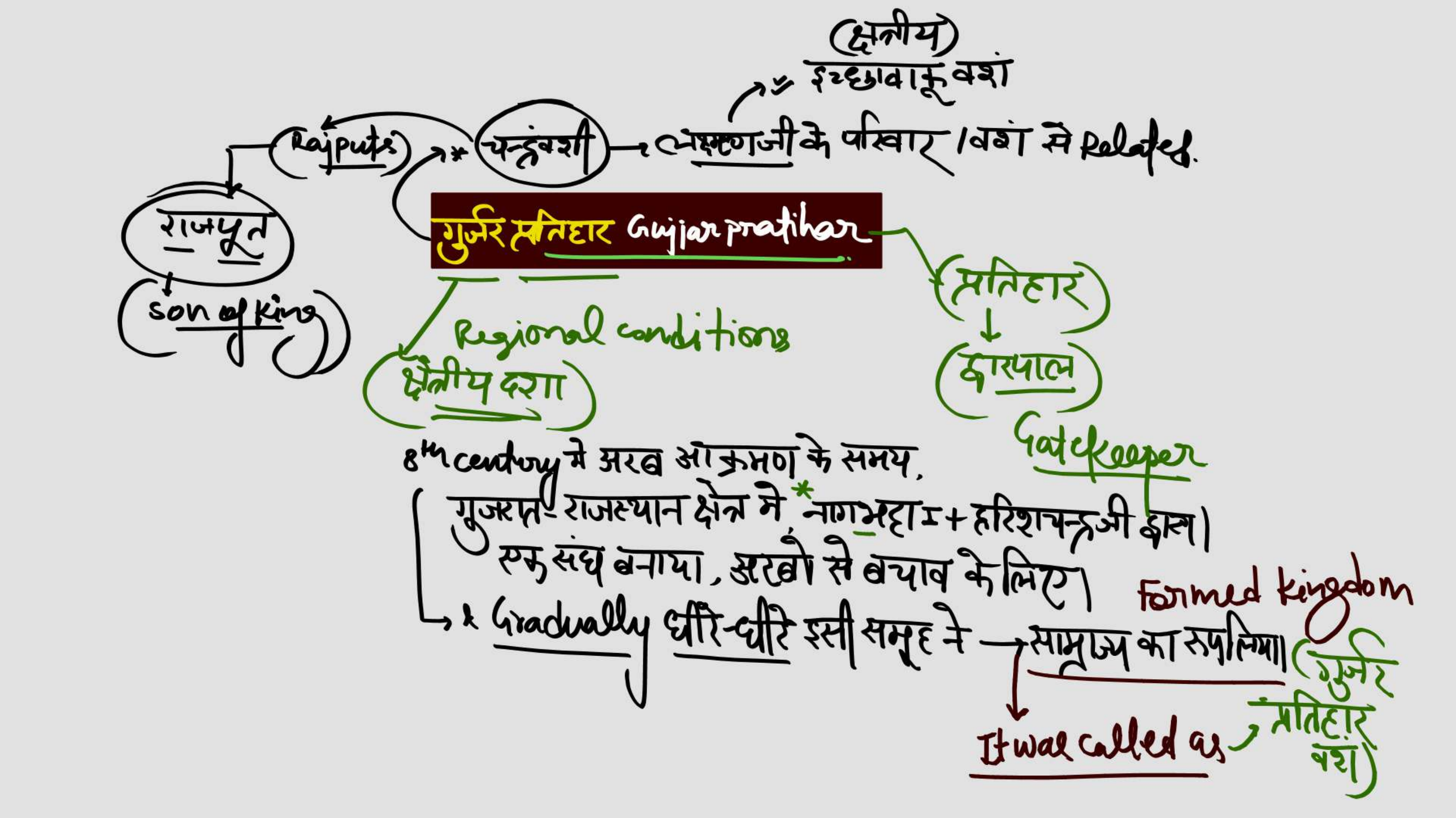

(क्षत्रीय)
इच्छवाकू वंश

Rajputs → राजपूत (son of King)

* चन्द्रवंशी → श्रीकृष्णजी के परिवार / वंश से Related.

गुर्जर प्रतिहार Gujjar pratihar

(प्रतिहार) ↓ (द्वारपाल) Gatekeeper

Regional conditions
(क्षेत्रीय दशा)

8th century मे अरब आक्रमण के समय.

गुजरात-राजस्थान क्षेत्र मे *नागभट्ट I + हरिशचन्द्रजी द्वारा।
एक संघ बनाया, अरबो से बचाव के लिए।

* Gradually धीरे-धीरे इसी समूह ने → साम्राज्य का रूप लिया। (गुर्जर प्रतिहार वंश)

Formed kingdom

It was called as → गुर्जर प्रतिहार वंश

JR
Jeet Rana GS

राजपूतों का उदय और 'राजपूत' शब्द का अर्थ

कालांतर में चलकर उत्तर भारत के इन सभी राज्यों के शासक 'राजपूत' कहलाए।

'राजपूत' शब्द संस्कृत के 'राजपुत्र' से आया है, जिसका अर्थ होता है 'राजा का पुत्र'।

कुछ लोग इसकी व्याख्या 'रज पुत्र' के रूप में भी करते हैं, जिसका अर्थ होता है 'भूमि का पुत्र'।

वैदिक धर्म के अनुसार ये मूलतः क्षत्रिय थे, जिनका मुख्य कार्य युद्ध करना और रक्षा करना होता था।

Jeet Rana GS

JR
Jeet Rana GS

गुर्जर प्रतिहारों की उत्पत्ति: अग्निकुल का सिद्धांत

अग्निकुल के सिद्धांत के अनुसार, ऋषि वशिष्ठ ने माउंट आबू पर्वत पर यज्ञ किया था।

उस यज्ञ की आहुति से चार देव पुरुष पैदा हुए: चौहान, प्रतिहार, परमार और चालुक्य (सोलंकी)।

इस सिद्धांत की जानकारी मुख्य रूप से चंद बरदाई (मूल नाम: पृथ्वी चंद्र भट्ट) द्वारा रचित ग्रंथ 'पृथ्वीराज रासो' से मिलती है।

इसके अलावा 'हम्मीर रासो', 'नवसाहसांक चरित' और चौहानों के 'सिवाना अभिलेख' में भी अग्निकुल सिद्धांत का वर्णन मिलता है।

हालांकि, बिना वैज्ञानिक तथ्य के होने के कारण इतिहासकार इस मत को खारिज करते हैं।

Jeet Rana GS

गुर्जर प्रतिहारों की 'विदेशी उत्पत्ति' के मत

कई इतिहासकार मानते हैं कि गुर्जर प्रतिहार विदेशी मूल के थे।

कर्नल जेम्स टॉड (राजस्थान के इतिहास के पिता) : इनके अनुसार ये सीथियन (Scythians) के वंशज थे।

विंसेंट स्मिथ : इन्होंने प्रतिहारों को शक और हूणों से उत्पन्न बताया है।

कैंबेल, जैक्सन और डी.आर. भंडारकर : इन इतिहासकारों का मानना है कि हूणों के साथ 'खजर' (Khazar) नामक जाति भारत आई थी, प्रतिहार उसी खजर जाति से हैं।

कनिंघम : इन्होंने प्रतिहारों को 'यूची' (Yuezhi) वंश की कुषाण शाखा से संबंधित बताया है।

Jeet Rana GS

गुर्जर प्रतिहारों की 'भारतीय उत्पत्ति' और सामाजिक-आर्थिक कारण

गौरीशंकर हीराचंद ओझा और सी.वी. वैद्य: इन दोनों इतिहासारारों ने भारतीय उत्पत्ति के सिद्धांत का समर्थन किया है और इन्हें प्राचीन क्षत्रिय माना है।

दशरथ शर्मा और वी.एस. पाठक: इनका मानना है कि गुर्जर प्रतिहारों का उदय तात्कालिक सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों (Socio-economic impact) के कारण हुआ।

बाह्य आक्रमणों को रोकने के लिए उस समय एक मजबूत रक्षक की आवश्यकता थी, जिसके कारण इस वंश ने खुद को खड़ा किया।

Jeet Rana GS

कन्नौज के लिए 'त्रिपक्षीय संघर्ष' (Tripartite Struggle)

Jeet Rana GS

9वीं शताब्दी से लेकर 11वीं शताब्दी तक (लगभग 200 वर्षों तक) उत्तरी भारत में कन्नौज पर अधिकार के लिए एक बड़ा त्रिपक्षीय संघर्ष चला।

इस संघर्ष में तीन महान राजवंश शामिल थे: राष्ट्रकूट, गुर्जर प्रतिहार, पाल वंश।

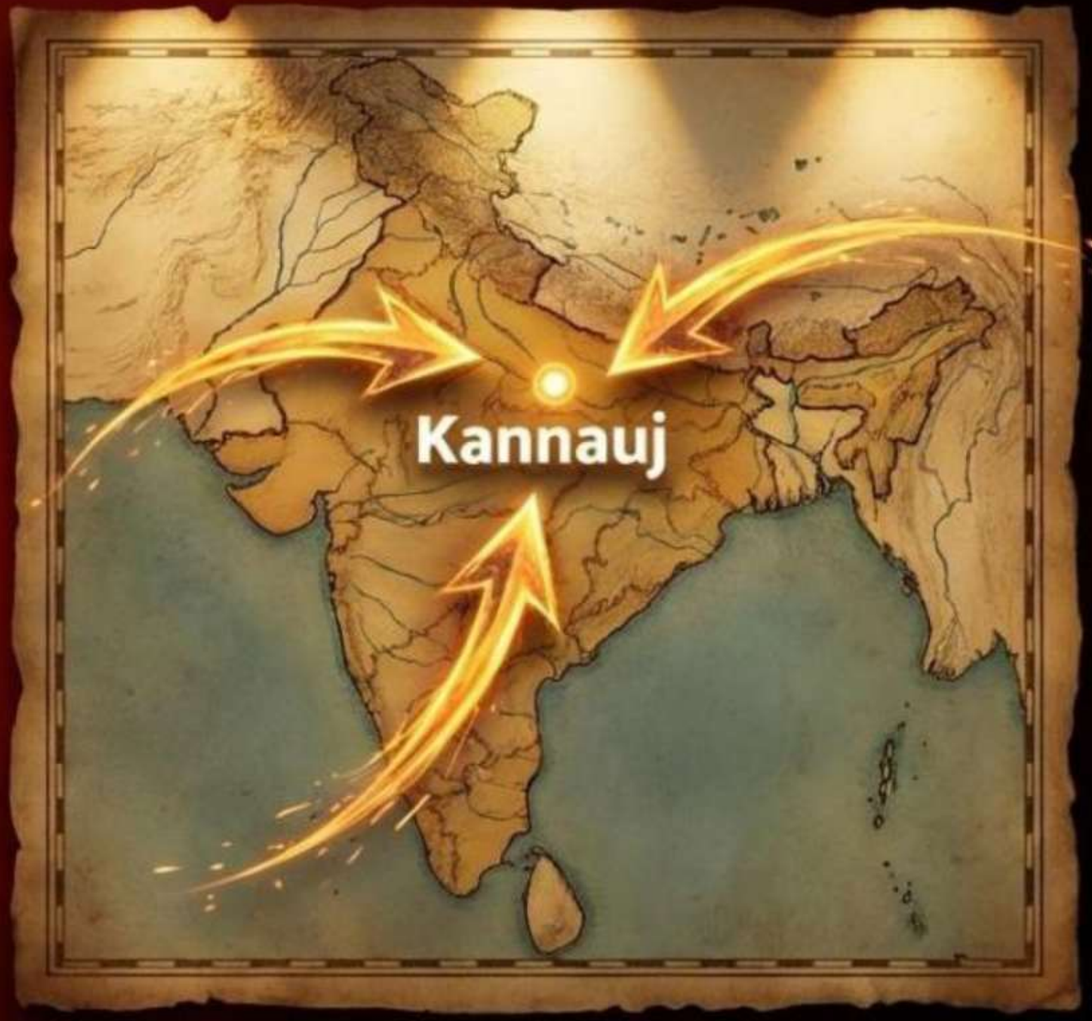

अंततः इस लंबे 'त्रिपक्षीय संघर्ष' में गुर्जर प्रतिहार राजवंश की विजय हुई और उन्होंने कन्नौज पर अधिकार कर लिया।

Jeet Rana GS

Jeet Rana GS

नागभट्ट प्रथम (730 - 756 ईस्वी): वंश के संस्थापक

नागभट्ट प्रथम को गुर्जर प्रतिहार वंश का प्रथम शासक और संस्थापक माना जाता है ।

इन्हें प्रतिहार, द्वारपाल और रक्षक जैसी संज्ञाएं दी गई हैं ।

नागभट्ट प्रथम ने 'जुनैद' नामक अरबी आक्रमणकारी को बुरी तरह पराजित किया था ।

नागभट्ट प्रथम के अधीन प्रतिहारों की प्रारंभिक राजधानी 'मंडोर' स्थापित की गई थी ।

इनकी सैन्य उपलब्धियों का प्रमाण 'मंदसौर के शिलालेख' में मिलता है ।

Jeet Rana GS

(Nagbhatta-I)

(नागभट्ट-I) हरिशचन्द्र (730-60)

संस्थापक founder

NON-Important

देवराज (760-75)* (760-80)

वास्तविक संस्थापक

(Real founder)

* वत्सराज 780-805

vatsraj

(Defeated Bhandi) (भंडी नामक शासक को हराकर कन्नौज पर कब्जा।) To capture Kannouj

. कन्नौज के त्रिपक्षीय संघर्ष मे भाग लिया। Triparty struggle.

उत्तराधिकारी successor (नागभट्ट-II)

✓ धर्मपाल V/s (वत्सराज) vatsraj ✓ (won)

✓ वत्सराज V/s ध्रुव (राष्ट्रकूट) (won)

वत्सराज (775 - 800 ईस्वी): वास्तविक संस्थापक

वत्सराज को गुर्जर प्रतिहार वंश का 'वास्तविक संस्थापक' (Real Founder) कहा जाता है ।

त्रिपक्षीय संघर्ष की वास्तविक शुरुआत इन्हीं के शासनकाल में हुई थी ।

वत्सराज ने बंगाल के पाल वंश के शासक 'धर्मपाल' को पराजित किया था ।

हालांकि, वत्सराज को राष्ट्रकूट राजा 'ध्रुव' के हाथों पराजय का सामना करना पड़ा था ।

इसके बाद कन्नौज में 'इंद्रा युद्ध' को शासक नियुक्त किया गया था ।

By Dhruva

Jeet Rana GS

नागभट्ट द्वितीय (800 - 833 ईस्वी) की महान विजय

Jeet Rana GS

* (805-833)

नागभट्ट द्वितीय इस वंश के एक अत्यंत प्रतापी शासक थे। → Eminent Ruler

इन्होंने 816 ईस्वी के 'मुंगेर के युद्ध' में पाल वंशीय शासक धर्मपाल को फिर से हराया।

नागभट्ट द्वितीय ने इंद्रा युद्ध के वंशज 'चक्रायुद्ध' को हराकर कन्नौज पर पूर्ण अधिकार कर लिया और उसे अपनी राजधानी बनाया।

→ Nagbhatta Defeated (Chakrayudha) To Gain Control over Kannauj

इन्होंने जोधपुर के पास ओसिया के प्रसिद्ध सूर्य मंदिर का निर्माण करवाया था।

ऐतिहासिक साक्ष्यों के अनुसार, सोमनाथ मंदिर का निर्माण/जीर्णोद्धार भी इन्हीं के समय पर हुआ था।

Jeet Rana GS

नागभट्ट द्वितीय की 'जल समाधि' और रामभद्र का शासन

Jeet Rana GS

जैन इतिहासकार 'प्रभा चंद्र सूरी' ने अपनी पुस्तक 'प्रभावक चरित' में नागभट्ट द्वितीय के अंत का वर्णन किया है ।

इसके अनुसार, नागभट्ट द्वितीय ने गंगा नदी में जल समाधि लेकर अपने जीवन का अंत किया था ।

नागभट्ट द्वितीय के बाद 'रामभद्र' (833 - 836 ईस्वी) गद्दी पर बैठा, लेकिन वह एक अत्यंत कमजोर शासक था ।

अतः रामभद्र को हटाकर उसका प्रतापी पुत्र (मिहिर भोज) गद्दी पर आसीन हुआ ।

Jeet Rana GS

सम्राट मिहिर भोज / भोज प्रथम (836 - 885 ईस्वी)

Jeet Rana GS
Premium Coaching Institute

सम्राट मिहिर भोज प्रतिहार इस वंश के सबसे महान और प्रतापी शासक थे, जिन्होंने 49 वर्षों तक शासन किया।

आद्य
Tittle → (प्रभास/आदिवराह)
(Source of Information)
(पहोवा अभिलेख Punjab)
(Veer Bhogya vasundhara)

इनके शासनकाल का मूल मंत्र था "वीर भोग्य वसुंधरा" (इस धरती पर राज करने का अधिकार केवल वीरों को है)।

इन्होंने राष्ट्रकूट शासक 'कृष्ण द्वितीय' से युद्ध करके मालवा क्षेत्र को पुनः छीन लिया था।

Again captured (malwa) After defeating (कृष्ण II)

गोरखपुर के कल्चुरी और जोधपुर के गुहिल इनके मित्र थे।

Jeet Rana GS

मिहिर भोज की प्रमुख उपाधियां और शिलालेख

Jeet Rana GS
Premium Coaching Institute

मिहिर भोज के इतिहास की जानकारी मुख्य रूप से दो शिलालेखों से मिलती है: 'ग्वालियर शिलालेख' और 'दौलतपुर शिलालेख'।

ग्वालियर शिलालेख में सम्राट मिहिर भोज को 'आदि वराह' (भगवान विष्णु के अवतार) की उपाधि दी गई है।

इसी ग्वालियर शिलालेख में अरबों को अत्यंत गंदे और असभ्य बताते हुए 'म्लेच्छ' (Mlechchhas) कहा गया है।

Jeet Rana GS

मिहिर भोज की सैन्य शक्ति और अरब यात्री 'सुलेमान' का वर्णन

Jeet Rana GS
Premium Coaching Institute

सम्राट मिहिर भोज के समय 851 ईस्वी में अरब यात्री सुलेमान (Sulaiman) भारत आया था।

During (Mahipal)

• अलमसूदी (Arabian Traveller) इसी समय का उल्लेख देगा। गुर्जर प्रतिहारों को अलबौरा कहा।

सुलेमान ने मिहिर भोज के बारे में दो बड़ी बातें लिखीं:
मिहिर भोज के पास सबसे विशाल अश्वरोही सेना (Cavalry) है।

मिहिर भोज अरबों का सबसे बड़ा शत्रु (Biggest enemy of Arabs) है

Jeet Rana GS

मिहिर भोज के सिक्के और अर्थशास्त्र

Jeet Rana GS

मिहिर भोज ने अपने साम्राज्य में **चांदी और तांबे (Silver and Copper)** के सिक्के चलवाए थे।

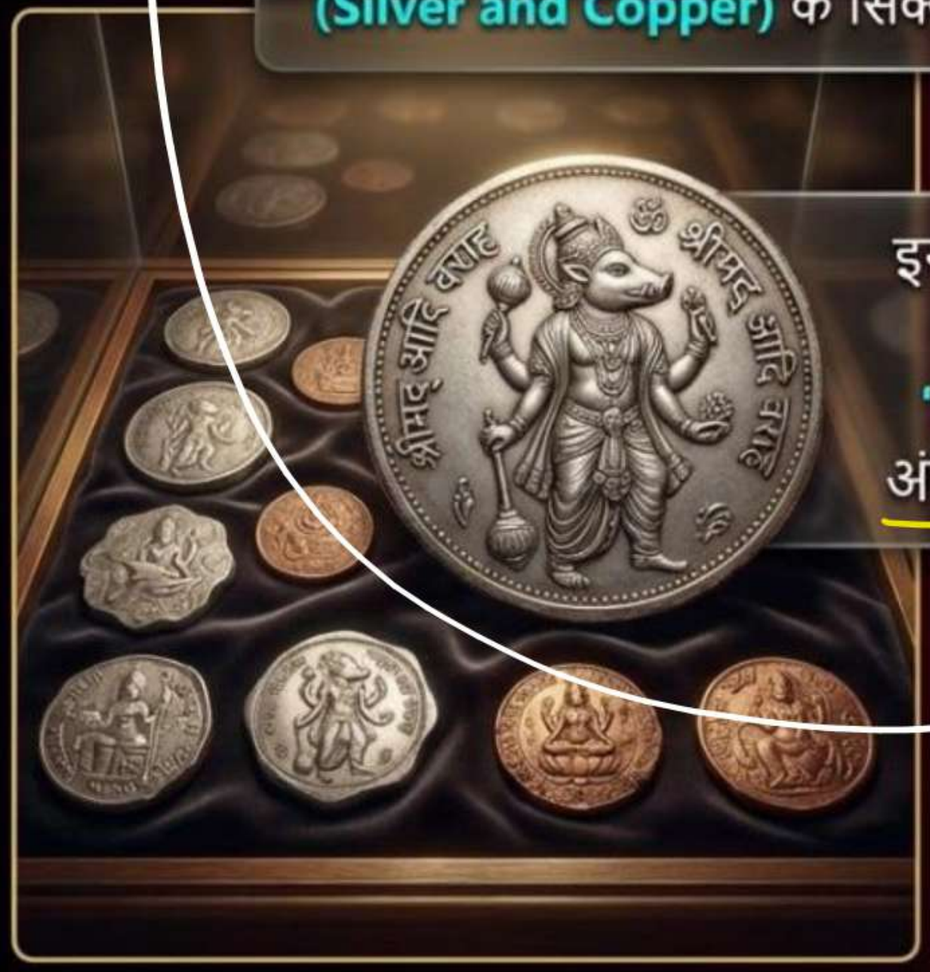

Engraving of Adivaraha on coins.

इन सिक्कों पर भगवान विष्णु के सम्मान में **'श्रीमद् आदि वराह'** अंकित हुआ करता था।

(Successor)
उत्तराधिकारी → महेन्द्रपाल (885-910)

मिहिर भोज के समय बुंदेलखंड के चंदेल और मेवाड़ के शासक पूरी तरह से इनके सामंत हुआ करते थे।

Jeet Rana GS

महेंद्र पाल प्रथम (885 - 910 ईस्वी) : साम्राज्य का अधिकतम विस्तार

Jeet Rana GS

स्कंद पुराण के अनुसार, मिहिर भोज तीर्थ यात्रा पर निकल गए और उन्होंने अपना पूरा शासन 'महेंद्र पाल प्रथम' को सौंप दिया ।

महेंद्र पाल प्रथम के शासनकाल में गुर्जर प्रतिहार साम्राज्य का 'सर्वाधिक विस्तार' (Largest Expansion) हुआ ।

इनका राज्य हिमालय से लेकर विंध्याचल तक और पूर्वी समुद्र तट से पश्चिमी समुद्र तट तक फैल गया था ।

इन्होंने बंगाल के पाल शासक 'नारायण पाल' को बुरी तरह पराजित किया था ।

Jeet Rana GS

महाकवि राजशेखर और उनकी प्रसिद्ध रचनाएं

महेंद्र पाल प्रथम ने विद्वानों को बहुत संरक्षण दिया; उनके दरबार में सबसे महान कवि 'राजशेखर' निवास करते थे।

अवंति सुंदरी

कथासागर

राजशेखर ने अनेक महान ग्रंथों की रचना की:

- कर्पूर मंजरी (यह एक नाटक है जो 'प्राकृत भाषा' में लिखा गया है)।
- बाल रामायण।
- बाल भारत।
- काव्य मीमांसा।
- हरविलास।
- विद्धशालभंजिका।

Jeet Rana GS

राजशेखर द्वारा महेंद्र पाल प्रथम को दी गई उपाधियां

Jeet Rana GS

दरबारी कवि राजशेखर ने महेंद्र पाल प्रथम को कई शक्तिशाली उपाधियों से सुशोभित किया था। प्रमुख उपाधियां इस प्रकार थीं:

निर्भय नरेश

निर्भय नरेंद्र

रघु ग्रामीणी

रघुकुल चूड़ामणि / रघुवंश चूड़ामणि ।

Jeet Rana GS

महिपाल प्रथम (912 - 944 ईस्वी) का शासन

महेंद्र पाल प्रथम के बाद भोज द्वितीय (910-912 ईस्वी) गद्दी पर बैठा,

↓

जिसे महिपाल प्रथम ने हराकर सत्ता छीन ली।

इसी के समय में राष्ट्रकूटों से युद्ध।
इन्द्र III vs महीपाल

राजशेखर ने महिपाल प्रथम को भी दो प्रमुख उपाधियां दी थीं :

- रघुकुल मुकुट मणि।
- आर्यावर्त का महाराजाधिराज।

Jeet Rana GS

महिपाल प्रथम के समय कन्नौज पर आक्रमण और पतन की शुरुआत

महिपाल प्रथम के शासनकाल के दौरान ही राष्ट्रकूट शासक 'इंद्र तृतीय' ने कन्नौज पर भीषण आक्रमण कर दिया।

इंद्र तृतीय ने कन्नौज को पूरी तरह नष्ट कर दिया; हालाँकि उसके जाने के बाद महिपाल ने स्थिति संभाली, लेकिन प्रतिहार साम्राज्य के पतन की शुरुआत यहीं से हो गई।

Jeet Rana GS

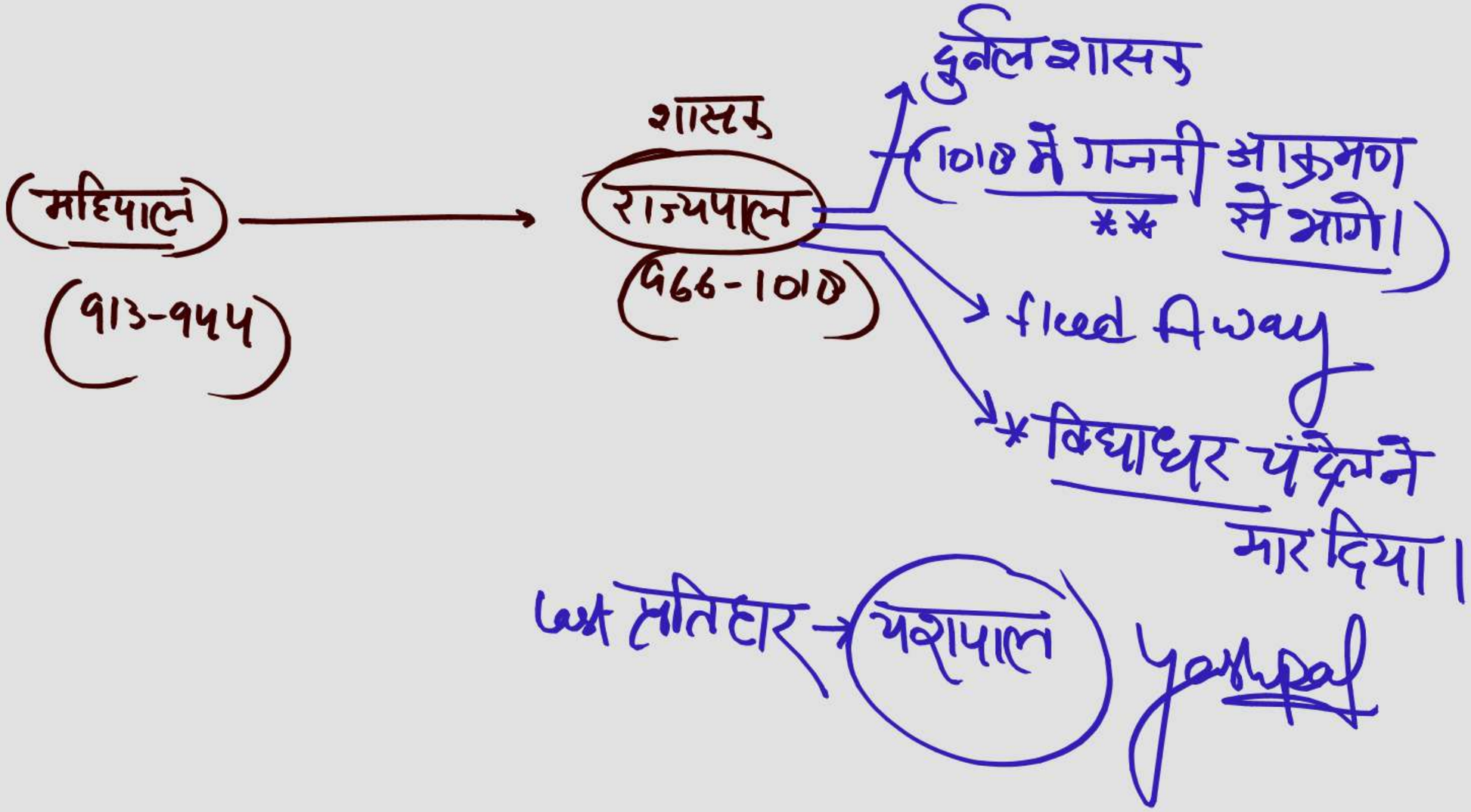
महिपाल
(913-955)
शासन
राज्यपाल
(966-1018)
दुर्बल शासन
1018 में गजनी आक्रमण से भागे।
**
Fled Away
*विद्याधर चंदेल ने मार दिया।
Last तोमर हार
यशपाल
Yashpal

महमूद गजनवी का आक्रमण और राज्यपाल का पलायन

साम्राज्य के पतन के दौर में (लगभग 1018 ईस्वी में) 'राज्यपाल' नामक शासक का कन्नौज पर राज था।

उसी समय महमूद गजनवी ने कन्नौज पर आक्रमण कर दिया।

गजनवी और तुर्कों के खौफ के कारण कायर शासक 'राज्यपाल' युद्ध का मैदान छोड़कर भाग खड़ा हुआ।

Jeet Rana GS

विद्याधर चंदेल का प्रताप और राज्यपाल की हत्या

बुंदेलखंड (कालिंजर) के चंदेल शासक 'विद्याधर चंदेल' अत्यंत प्रतापी थे। गजनवी अपने 17 आक्रमणों में से एकमात्र विद्याधर चंदेल को कभी नहीं हरा सका।

युद्ध से भागने के कारण क्रोधित होकर विद्याधर चंदेल ने अपने कछवाहा सामंत 'अर्जुन' के माध्यम से राज्यपाल की हत्या करवा दी।

विद्याधर चंदेल ने खजुराहो में प्रसिद्ध 'कंदरिया महादेव मंदिर' का निर्माण भी करवाया था।

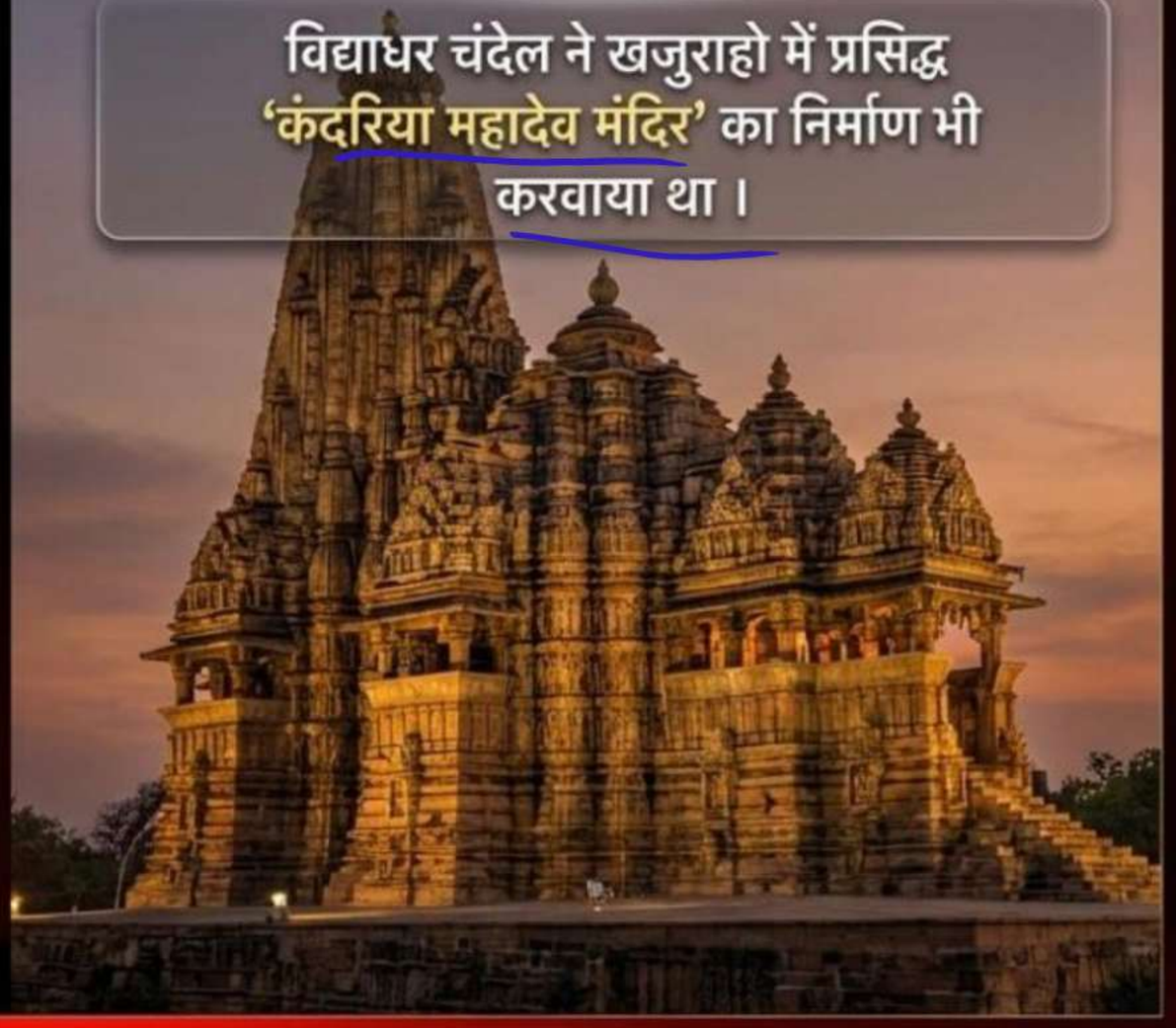

Jeet Rana GS

Jeet Rana GS

प्रतिहार वंश का अंतिम शासक और सामंतों की स्वतंत्रता

प्रतिहार वंश के अंतिम शासकों में त्रिलोचन पाल और 'यशपाल' का नाम आता है।

यशपाल गुर्जर प्रतिहार वंश का बिल्कुल अंतिम शासक (Last Ruler) था।

इसके बाद केंद्रीय सत्ता समाप्त हो गई और प्रतिहारों के सभी 'सामंत' (Feudatories) मजबूत होकर पूर्णतः स्वतंत्र हो गए।

Jeet Rana GS

Triparty Struggle
(त्रिपक्षीय संघर्ष)

(कन्नौज Ruler) 770AD

① (वज्रायुद्ध) 770CE

783 हत्या By कश्मीरी Rulers.

(इन्द्रायुद्ध चक्रायुद्ध)

(प्रशासक बने।)

(धर्मपाल) Dharmpal → इन्द्रायुद्ध हराया
चक्रायुद्ध बिठाया।

प्रथम चरण (790-810)

• 790 प्रयागराज (वत्सराज) v/s धर्मपाल won

• ध्रुव धारावर्ष ने वत्सराज को हराया।
↳ He Helped (धर्मपाल)

• धर्मपाल ने चक्रायुद्ध को बिठाया।

II (Phase)
मुंगेर

• नागभट्ट II v/s धर्मपाल
(won)
↓
कन्नौज पर कब्जा।

• गोविंद III v/s नागभट्ट II
(won)
Son ध्रुव

(So) End में कन्नौज प्रतिहारो का रहा।

लेकिन कन्नौज नहीं लिया।